एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

देश की आर्थिक समृद्धि में तिलहनी फसलों की भूमिका

(*शक्ति सिंह[1] एवं हिमांशु पाण्डेय[2])
[1]बांदा कृषि एवं प्रौधोगिकी विश्वविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश- 210001
[2]भाकृअनुप - भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश- 226002
* shaktisingh1024@gmail.com

तिलहनी फसलों को प्राचीन काल से ही कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया हैं तथा सम्पूर्ण विश्व में खाद्य तेल आधारित उद्योगों एवं व्यापारों में तिलहनी फसलों की प्रमुख भूमिका रही हैं। विश्व में तिलहन उत्पादन में भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील, चीन, अर्जेंटीना के साथ अग्रिणी पायदान पर स्थित है, देश में विभिन्न प्रकार की तिलहनी फसलों की खेती मुख्य रूप से की जाती है जोकि निमन्वत हैं -

(क) रेपसीड/सरसों
(ख) मूंगफली
(ग) तिल
(घ) सूरजमुखी
(ङ) अलसी
(च) अरंडी बीज
(छ) सोयाबीन

विश्व में भारत मूंगफली का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है, तथा चीन और कनाडा के बाद रेपसीड का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत देश में सन 1951 में लगभग 5 मिलियन टन तिलहन का उत्पादन कियाजाता था, जो यह बढ़कर सन 1970 में लगभग 9 मिलियन टन उल्लेखनीय प्रगति देखी गई, तथा जोकि वर्तमान समय में प्रमुख तिलहनी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल का लगभग 14 प्रतिशत हिस्सा है।

तिलहनी फसलों का पोषण मूल्य:-

तिलहनी फसलें हमरे दैनिक जीवन में अत्यंत अहम भूमिका निभाती है जिनका विवरण अग्र लिखित निमन्वत है,

- खाद्य तेल केंद्रित ऊर्जा के मुख्य स्रोत है इनमे उपयोगी कार्बोहाइड्रेट, आवश्यक फैटी एसिड और विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है।
- विभिन्न प्रकार के खाद्य तेल मानव भोजन में संतृप्त फैटी एसिड, मोनो अनसैचुरेटेड फैटी एसिड और असंतृप्त फैटी एसिड के रूप में उपलब्ध होते है, जोकि मानव जीवन से संबन्धित आवश्यक कामों के निष्पंदन के लिए बहुत जरूरी होते है।

तिलहन उत्पादन में चुनौतियाँ एवं अवसर:-

देश के तिलहन उत्पादक किसानों को वर्तमान परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जोकि निम्नलिखित है।

- ❖ कम उपज और अस्थिर बाजार मूल्य के कारण तिलहन का उत्पादन अधिक अनाकर्षक होता जा रहा है।
- ❖ व्यापार उदारीकरण के कारण आयातित खाद्य तेलों की कीमतों में अधिक उछाल होने से देश के विभिन्न वर्ग के समुदायों को प्रत्यक्ष रूप से सामना करना पड़ता है।
- ❖ ऐसा लगता है कि तिलहनी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्यभी कारगर नहीं है, क्योंकि यह खाद्यान फसलों के मामले मेंअधिक कारगर रही है, अर्थात तिलहन उत्पादक किसानों और हित धारकों के हितों को संतुलित करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप के साथ-साथ प्रभावी नीतियों की अभी भी अत्यंत आवश्यकता है।

तिलहन उत्पादन में आर्थिक समृद्धि लाने के लिए योजनाओं एवं कार्यक्रमों की भूमिका:-

भारत देश में विभिन्न प्रकार की तिलहनी फसलों के द्वारा बड़ी मात्रा में खाद्य तेल प्राप्त किया जाता है, जोकि आजादी के लगभग सात दशकों के अथक प्रयास एवं नवीनतम तकनीकों के हस्तक्षेप तथा उन्नतशील क़िस्मों की सहायता से उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने और देश की आर्थिक समृद्धि को बरकरार रखने में पेशकश की है। प्राचीन काल से कई संस्कृतियों में वनस्पतिक तेलों का उपयोग खाना पकाने के लिए, खाद्य पदार्थों के रूप में, ईंधन के रूप में, साबुन, मोमबत्तियों, इत्र आदि के लिए किया जाता रहा है। भारत देश ने वनस्पतिक तेलों के वैश्विक उत्पादन में निरंतर वृद्धि कर रहा है। वर्ष 2007 के बाद से तेल उत्पादन में लगभग 5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है, हालांकि यह वृद्धि पहले की अपेक्षा में धीमी पड़ गयी है।

सम्पूर्ण देश में तिलहन उत्पादन में वृद्धि दर बढ़ाने और मांग एवं आपूर्ति के बीच के अंतर को कम करने एवं आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होने के लिए भारत सरकार ने समय-समय पर उत्पादन उन्मुख कार्यक्रम की शुरुआत की है। भारत सरकार द्वारा वर्ष 1986 में तिलहन विकास परियोजना और तिलहन उत्पादन जोर कार्यक्रम शुरू किए गए, तथा इन कार्यक्रमों को तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन द्वारा नियंत्रित किया गया और फिर इन योजनाओं को एक ही योजना तिलहन उत्पादन कार्यक्रम में सम्मिलित कर दिया गया है।

तालिका 1.1: भारत में सिंचाई के तहत अखिल भारतीय क्षेत्र, उत्पादन, उपज सहित क्षेत्रफल -मिलियन हेक्टेयर, उत्पादन - मिलियन टन, उपज - किग्रा/हैक्टेयर 2017-2018.

मुख्य तिलहनी फसलें	क्षेत्रफल	उत्पादन	उपज
सरसों	5.96	8.82	1397
मूँगफली	4.91	9.18	1868
सोयाबीन	10.47	10.98	1049
सूरजमुखी	0.29	0.21	738

भारत देश में वनस्पतिक तेलों का उत्पादन बड़े स्तर पर किया जाता है इनमें से मुख्यतः उच्च ग्रेड, खाद्य तेल जैसे- सोयाबीन, सरसों, मूंगफली, सूरजमुखी एवं कुसुम इत्यादि का उत्पादन वैश्यविक स्तर पर किया जा रहा हैं तथा अखाद्य तेलों में मुख्य रूप से अरंडी और अलसी शामिल हैं। हालांकि सोयाबीन सबसे अधिक एवं सूरजमुखी सबसे कम क्षेत्रफल पर उत्पादित की जाने वाली तिलहनी फसल है। देश की आर्थिक समृद्धि में तिलहनी फसलों की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसे कदापि नकारा नही जा सकता। सम्पूर्ण देश में

विभिन्न प्रकार की तिलहनी फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है, जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन निमन्वत है।

सरसों (*ब्रैसिका स्पेसिज*):-

ब्रैसिका स्पेसिज से संबंधित पौधों के बीजों से तेल हजारों वर्षों से निकाला जा रहा है परंतु पिछले 30 वर्षों के दौरान ब्रैसिका स्पेसिज की फसलों की माँग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत अधिक बढ़ गयी है इनमे से दो महत्वपूर्ण व्यावसायिक तिलहनी स्पेसिज हैं:- (क) ब्रैसिका कैंपेस्टरिस:- इसका विश्वव्यापी वितरण है। (ख) ब्रैसिका नेपस, ओलीफेरा:- ये यूरोप और उत्तरी अफ्रीका तक ही सीमित है। ये बहुत ही महत्वपूर्ण तिलहनी फसलों में से एक हैं, क्योंकि इसे मुख्यतः खाद्य तेल के रूप में प्रयोग किया जाता है, इसके बीज और तेल का उपयोग आमतौर पर अचार बनाने और खाना पकाने इत्यादि में होता है तथा इसमें लगभग 35 से 42 प्रतिशत तक तेल पाया जाता है। वर्ष 2020-21 के आंकड़ों के अनुसार सम्पूर्ण भारत में लगभग 81.66 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल पर सरसों की खेती की गयी, जिससे लगभग 85.00 लाख टन सरसों का उत्पादन हुआ है और उत्पादकता 1350 किलो ग्राम प्रति हैक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्र पर पायी गयी है।

सोयाबीन (*ग्लाइसिन मैक्स*):-

सन 2020 - 21 के आंकड़ों के अनुसार सोयाबीन की खेती लगभग 110 लाख हैक्टेयर पर खेती की जा रही है और उत्पादन लगभग 118.09 लाख टन तथा उत्पादकता लगभग 1850 किलो ग्राम प्रति हैक्टेयर है। भारत देश में सबसे अधिक सोयाबीन का उत्पादन मध्य प्रदेश राज्य द्वारा किया जाता है। इसमें लगभग तेल की मात्रा 18 - 20 प्रतिशत और प्रोटीन की मात्रा 40 - 42 प्रतिशत तक पायी जाती है। तथा इसके तेल का उपयोग मुखतः खाना बनाने में किया जाता है।

मूँगफली (*एरचिस हाइपोजिया*):-

मूँगफली की फसल को एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। उन्नत तकनीकों एवं किस्मों का प्रयोग करके उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने में सफलता हासिल की गयी है। भारत देश में उत्पादित किए जाने वाले प्रमुख तिलहनों में से लगभग आधा हिस्सा इसी से प्राप्त किया जाता है। सम्पूर्ण भारत में गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पंजाब इत्यादि राज्यों में मूँगफली बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। इनमें से गुजरात सबसे अग्रिणी राज्य है जिसके बाद तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक का स्थान आता है। सन 2020 - 21 के आंकड़ों के अनुसार सम्पूर्ण भारत में लगभग 40.56 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल पर मूँगफली की खेती की जा रही और उत्पादन लगभग 60.77 लाख टन तथा उत्पादकता 1486 किलो ग्राम प्रति हैक्टेयर है। मूंगफली में तेल की मात्रा लगभग 44 - 50 प्रतिशत और प्रोटीन की मात्रा 25 - 27 प्रतिशत तक पायी जाती है तथा

इसके तेल का उपयोग साबुन बनाने, सौंदर्य प्रसाधन एवं स्नेहक बनाने में किया जाता है।

सूरजमुखी (*हेलिएन्थस एनस*):-

सम्पूर्ण भारत देश में वर्ष 2020-21 के आकांडों के अनुसार इसका क्षेत्रफल लगभग 15.00 लाख हैक्टेयर और उत्पादन 90.00 लाख टन तथा उत्पादकता 700 किलो ग्राम प्रति हैक्टेयर है। सूरजमुखी को मुख्य रूप से तेल के लिए उगाया जाता है। इसका तेल खाना पकाने, वनस्पति घी बनाने और साबुन बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। यह विशेष रूप से हृदय रोगियों के लिए अनुशंसित है। सूरजमुखी के बीज में लगभग 42 - 48 प्रतिशत तेल और लगभग 25 - 38 प्रोटीन पायी जाती है, तथा सूरजमुखी की खली प्रोटीन से भरपूर होने के कारण इसका उपयोग मवेशियों और पोल्ट्री फीड में किया जाता है।